हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में मीडिया का योगदान

पूजा रानी
सहायक प्रवक्ता हिंदी,
राजकीय महाविद्यालय आदमपुर (हिसार)

21वीं सदी की व्यावसायिकता जब हिंदी को केवल शास्त्रीय भाषा कहकर इसकी उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगाने लगी तब इस समर्थ भाषा ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की वरन् इस घोर व्यवसायिकता के युग में संचार की तमाम प्रतिस्पर्धाओं को लांघ कर अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। जनभाषा के सबसे सशक्त माध्यम मीडिया ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में वैश्विक क्रांति ला दी है। आज प्रत्येक व्यक्ति हिंदी को बोल भी सकता है और समझ भी सकता है भले ही उसे लिखना–पढ़ना ना आता हो।

हिंदी भाषा दुनियाभर में समझी बोली जाती है। मीडिया ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनियाभर में भारतीय फिल्में टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे भी दुनिया में हिंदी का प्रचार–प्रसार हुआ है। सोशल मीडिया, इंटरनेट मोबाईल के कारण युवा पीढ़ी इस भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। यह इस भाषा की ताकत को बताता है। भाषा लोगों को जोड़ने का काम करती है। मीडिया में जिस हिंदी भाषा का प्रयोग होता है उसमें सामान्य बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी,अरबी, फारसी,संस्कृत तत्सम,तद्भव आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। मीडिया में प्रयुक्त होने वाली हिंदी को ओर भी प्रयोजनमूलक बनाने का श्रेय मीडिया को ही जाता है।

ऑनलाइन व्यापारः आज हम देख रहे हैं कि दुनिया में बाजारवाद का बोलबाला बढ़ रहा है। हर किसी के लिए अपना सामान बेचने की अंधाधुंध होड़ लगी हुई है। चाहे वह ऑनलाइन हो, चाहे ऑफलाइन हो,उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयत्न किया जा रहा है। मीडिया में विभिन्न कंपनियां अपने माल को बेचने के लिए जिन विज्ञापनों का प्रयोग कर रही हैं। उन विज्ञापनों में अधिकतर हिंदी भाषा का प्रयोग होता है,क्योंकि उन्हें पता है कि भारत की अधिकांश जनसंख्या हिंदी–भाषी है। आज के इस युग में विज्ञापनों का बोलबाला है।लोग प्रसारित होने वाले हिंदी भाषी विज्ञापनों को देखते हैं एवं भाषा की सकारात्मक अभिव्यक्ति को सुनकर अथवा देखकर वस्तु को खरीदने के लिए प्रेरित होते हैं।इस प्रकार विज्ञापन गुरु जान चुके हैं कि अगर माल बेचना है तो उन्हें हिंदी भाषा के साथ ही बाजार में उतरना पड़ेगा। जिस हिंदी भाषा का प्रयोग मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा किया जा रहा है। कुछ लोग हिंदी भाषा को हिंगलिश कहते हैं परंतु हिंदी भाषा अपने आप में ही सर्वगुण संपन्न भाषा है। तभी तो मीडिया ने हिंदी भाषा के प्रयोग को अपने विकास का तथा हिंदी के प्रचार का सशक्त माध्यम बना लिया है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडियाः भारत में इलेक्ट्रोनिक मीडिया पिछले 15–20 वर्षों में घर घर में पहुँच गया है फिर चाहे वह शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र। इन शहरों और कस्बों में केबल टीवी से सैकड़ो चौनल दिखाए जाते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत के कम से कम 80 प्रतिशत परिवारों के पास अपने टेलीविजन सेट हैं और मेट्रो शहरों में रहने वाले दो तिहाई लोगों ने अपने घरों में केबल कनेक्शन लगा रखे हैं। इसके साथ ही शहर से दूर–दराज के क्षेत्रों में भी लगातार डीटीएच–डायरेक्ट टु होम सर्विस का विस्तार हो रहा है।

प्रारम्भ में केवल फिल्मी क्षेत्रों से जुड़े गीत, संगीत और नृत्य से जुड़ी प्रतिभाओं के प्रदर्शन का माध्यम बना एवं लंबे समय तक बना रहा, इससे ऐसा लगने लगा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सिर्फ फिल्मी कला क्षेत्रों से जुड़ी प्रतिभाओं के प्रदर्शन के मंच तक ही सिमटकर रह गया है, जिसमे नैसर्गिक और स्वाभाविक प्रतिभा प्रदर्शन के अपेक्षा नकल को ज्यादा तवज्जो दी जाती रही है। कुछ अपवादों को छोड़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की यह नई

ISBN: 978-81-954645-0-0

भूमिका अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहनीय है, जो देश की प्रतिभाओं को प्रसिद्धि पाने और कला एवं हुनर के प्रदर्शन हेतु उचित मंच और अवसर प्रदान करने का कार्य कर रही है।

हम देखते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विभिन्न साधनों जैसे रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर, एफएम रेडियो एवं विज्ञापन कंपनियों अथवा एजेंसियों की बाढ़ में बिना लाग लपेट वाली हिंदी का ही बाजार चल रहा है। इंटरनेट पर हम देखते हैं कि हिंदी की बहुत सी वेबसाइट है। आज इंटरनेट पर हिंदी का लगभग अधिकतम साहित्य उपलब्ध है यदि किसी साहित्यकार की किसी जीवनी, कहानी, नाटक आदि किसी भी रचना की जानकारी प्राप्त करनी हो तो हम इंटरनेट पर उसकी खोज करके उससे संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते है। हिंदी के प्रयोग ने इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों में क्रांति ला दी है।टेलीविजन, रेडियो आदि पर प्रत्येक चौनल आम बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग करके अनेक प्रोग्राम प्रसारित कर रहा है क्योंकि हिंदी जन–जन की भाषा है एवं आसानी से बोली एवं समझी जाती है।दर्शक अपनी पसंद के नाटक,फिल्म, कृषि संबंधी प्रोग्राम, ज्ञानवर्धक बातें आदि इन चौनलों के माध्यम से देखते हैं। आज के इस तकनीकी युग में हिंदी भाषा में प्रकाशित बहुत से अखबार एवं पत्र–पत्रिकाएं भी इंटरनेट पर उपलब्ध है। हिंदी में प्रसारित विज्ञापनों के द्वारा भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भारत में क्रांति ला दी है।

प्रिंट मीडिया– प्रिंट मीडिया भी हिंदी भाषा के विकास में बढ़–चढ़कर योगदान दे रहा है। अनेकों पत्र–पत्रिकाएं,अखबार, पेंफलेट्स आदि अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। मीडिया लोगों के भाव को समझते हुए जन–जन भाषा हिंदी भाषा को इन्हीं लोगों में प्रचलित करने के लिए अपने विभिन्न माध्यमों द्वारा हिंदी का प्रयोग कर रहा है। हम देख रहे हैं कि बाजारवाद के असर से हिंदी भाषा का रूप बदलता जा रहा है। कुछ लोग हिंदी को बाजारू हिंदी की संज्ञा भी दे देते हैं परंतु हिंदी एक सरल,स्पष्ट,शुद्ध एवं परिनिष्ठित भाषा है। सर्वमान्य है कि यही लोग जब आम बोलचाल में हिंदी भाषा का उच्चारण करते समय व्याकरण के नियमों का पालन नहीं करते तब मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा हिंदी भाषा के सरल,स्पष्ट,शुद्ध व फूहड़ता रहित हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। व्याकरणिक नियमों के बंधन से रहित भाषा ही आम आदमी की हिंदी भाषा है। प्रत्येक व्यक्ति इसी हिंदी का प्रयोग अधिकतर आम बोलचाल में प्रयोग करता है । और हमने सुना भी है कि मीडिया में जो चलता है वही बिकता है तो इसका श्रेय हिंदी भाषा को दिया जा सकता है।

वेब मीडियाः हम कह सकते हैं कि वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ प्रत्येक भाषा एक संकाय की भांति प्रतीत होती है। इलेक्ट्रॉनिक संचार दृ माध्यम और कंप्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी अपनी जगह बना ली है. इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिंदी का प्रसार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिंदी का अपना बाजार भी बन रहा है. इससे हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है. कुछ इन्ही बातों को ध्यानमें रखकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा था– "यदि भारत को समझना है तो हिंदी सीखो".

आज जबकि वर्डप्रेस, इन्दिक्जूमला जैसे ढेरों ऐसे मंच उपलब्ध हैं जहाँ हम अपनी बात बेहद स्पष्ट व विस्तृत रूप से रख सकते हैं। यहाँ स्पष्टता से मतलब भाषीय स्वत्रंतता से है। हिंदी भाषा में कही बात यदि अंग्रेजी अनुवाद में कही जाय तो यह निश्चित है कि इसकी स्पष्टता में कम से कम दस फीसदी की कमी जरूर आयेगी। हिंदी के विकास में ब्लॉगिंग ने निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इसका प्रमाण यह है कि हिंदी के कई ऐसे ब्लॉग हैं जो रोजाना १००० से भी ज्यादा व्यक्तियों द्वारा देखे जाते हैं और यह कोई सामान्य बात नही है। वेब मीडिया ने हिंदी समेत सभी भाषाओं को एक सामान वैश्विक मंच प्रदान किया है। चूँकि हिंदी की अपनी विशेषताएं हैं इसलिए हिंदी अन्य भाषाओं से तेज व सकारात्मक रूप से परिवर्तनशील यानि विकासशील है।

सर्वप्रचलित एवं व्यवहार कुशल हिंदी ही संपर्क भाषा का रूप ले सकती है ना कि व्याकरणिक एवं साहित्यिक भाषा। मीडिया ही हिंदी भाषा के माध्यम से लोगों को प्रत्येक क्षेत्र खेल, संगीत, व्यापार, खबर, नाटक आदि की जानकारी प्रदान कर रही है।जिससे लोगों को घर बैठे– बैठे प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी प्राप्त हो रही है।इस प्रकार मीडिया हिंदी के विकास में भारत की एक सशक्त शक्ति के रूप में उभर रहा है।

सन्दर्भ:

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – विकिपीडिया
2. https://www.jagran.com/blogs/
3. हिन्दी के प्रचार में मीडिया की भूमिका डॉ. मंजू सांगवान
4. मीडिया में हिंदी की सार्थकताः सविता चड्ढा (anhadkriti.com